ज्ञानालोक

प्रवेशांक | गृह पत्रिका | वर्ष – 2021

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली - 110007

अंक: प्रवेशांक
2021

ज्ञानालोक

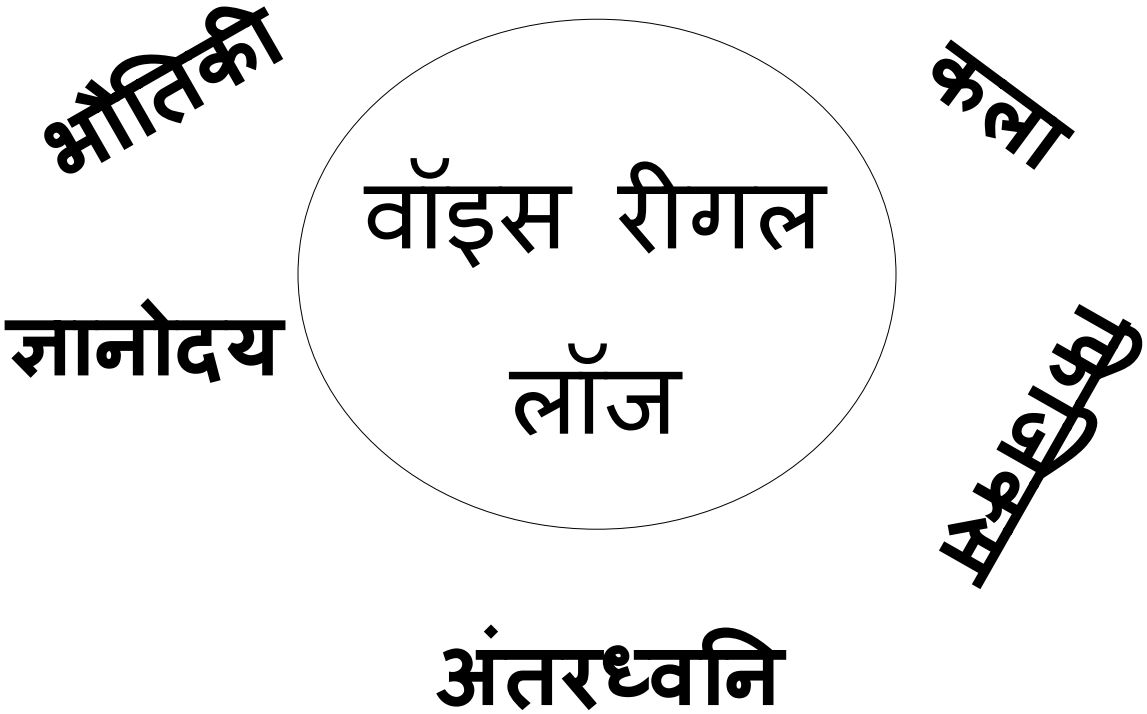

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली - 110007

उपलब्धियां Achievements

दिल्ली विश्वविद्यालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए 22 मई, 2017 को माननीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पाण्डेय द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय को राजभाषा शील्ड वर्ष 2015-16 प्रदान की गई।

दिल्ली विश्वविद्यालय में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य के लिए 22 मई, 2017 को माननीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पाण्डेय के कर कमलों से राजभाषा शील्ड-वर्ष 2015-16 को प्राप्त करते हुए प्रो. जितेन्द्र खुराना, सम-कुलपति एवं अध्यक्ष रा.भा.का.स., दिल्ली विश्वविद्यालय साथ में श्री आनंद कुमार सोनी, सहायक कुलसचिव (राजभाषा)

दिल्ली विश्वविद्यालय की वार्षिक गृह-पत्रिका

ज्ञानालोक

अंक : प्रवेशांक वर्ष : 2021

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

प्रो. योगेश सिंह, कुलपति एवं अध्यक्ष, राभाकास

डॉ. विकास गुप्ता
कुलसचिव

श्री गिरीश रंजन
वित्त अधिकारी

श्री राजेश सिंह
पुस्तकालयाध्यक्ष
दि. वि. पुस्कालय सिस्टम

श्री अनुपम श्रीवास्तव
विश्वविद्यालय अभियंता

प्रो. कुमुद शर्मा (निदेशक)
हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय

श्री संजीव सिंह
संयुक्त निदेशक (कंप्यूटर केंद्र)

श्री एस. रंगाबाष्यिम
संयुक्त कुलसचिव(वित्त -II)

डॉ. रोहन राय
संयुक्त कुलसचिव (स्थापना)

श्री संदीप कुमार
सहायक कुलसचिव(सामान्य)

श्री गौरव आनंद
सहायक कुलसचिव (वित्त), द.प.

श्री राकेश हसीजा
सहायक कुलसचिव(संपदा)

श्री आनंद कुमार सोनी
सहायक कुलसचिव (राजभाषा)

दिल्ली विश्वविद्यालय की वार्षिक गृह-पत्रिका

ज्ञानालोक

अंक : प्रवेशांक

वर्ष : 2021

संपादक मंडल

संरक्षक

प्रो. योगेश सिंह
कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय

सह-संरक्षक

डॉ. विकास गुप्ता
कुलसचिव, दिल्ली विश्वविद्यालय

मार्गदर्शक

श्री गिरीश रंजन
कुलसचिव, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन
अध्यक्ष (हिंदी विभाग)
(परामर्शदाता)

प्रो. कुमुद शर्मा
निदेशक, हि.मा.क.नि.
(परामर्शदाता)

डॉ. रोहन राय
संयुक्त कुलसचिव(स्थापना)

श्री आनंद कुमार सोनी
सहायक कुलसचिव (राजभाषा)
(संपादक)

संपर्क सत्र:

सहायक कुलसचिव (राजभाषा), कक्ष संख्या - 107, प्रथम तल, नया प्रशासनिक खंड,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली - 110007

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं, संपादक मंडल अथवा
दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रबंधन-तंत्र की उनसे सहमति होना आवश्यक नहीं है।

विषय सूची

क्रमांक	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	योग से ही संभव मानव की आंतरिक शक्तियाँ	विभाकर चतुर्वेदी	
2.	रीढ विकृति एवं उपाय	आशा गार्चा	
3.	पहाड़ों और झीलों के प्रदेशों की शैक्षिक-यात्रा:एक वृत्तांत	वरीश एवं विनोद कुमार कंवरिया	
4.	महिला और समाज	आशा रावत	
5.	प्रकृति एवं मानव	शशि कुमार शर्मा	
6.	फलसफ़ा वक्त का	वीनू भाटिया	
7.	मंजिल पानी है	वीनू भाटिया	
8.	महिला सशक्तिकरण और मानव अधिकार	विभाकर चतुर्वेदी	
9.	माँ क्या है	प्रवेश यादव	
10.	स्मृतियाँ	शशिकांत शर्मा	
11.	मधुर स्मृति	कमलेश खट्टर	
12.	शिक्षा में बदलाव	विश्वनाथ प्रसाद	
13.	पवित्र भूमि संकिसा के परम पावन दलाई लामा जी के तीन दिवसीय, धम्म सम्मेलन के दौरान मेरी संकिसा यात्रा का संक्षिप्त वर्णन	पिंकी देशराज	
14.	बढ़ी जा रही थी वो	पिंकी देशराज	
15.	उसका मेरा रिश्ता कुछ इस तरह से था	पिंकी देशराज	
16.	कल्पना	कनुप्रिया	
17.	बेटियाँ	कनुप्रिया	
18.	चिड़िया और लकड़ी	कनुप्रिया	
19.	थैला	कनुप्रिया	
20.	पर मेरा आज	कनुप्रिया	
21.	जीना चाहती हूँ	वीनू भाटिया	
22.	रिश्तों का सच	वीनू भाटिया	
23.	न जाने क्यूँ	वीनू भाटिया	

प्रेरण स्रोत की कलम से.....

संदेश

मुझे दिल्ली विश्वविद्यालय की गृह पत्रिका "ज्ञानालोक" के प्रवेशांक के प्रकाशन पर हार्दिक प्रसन्नता है । संघ की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के प्रति विश्वविद्यालय पूरी तरह से प्रतिबद्ध है और विश्वविद्यालय राजभाषा हिंदी का व्यापक प्रचार-प्रसार करता है एवं अधिकारियों तथा कर्मचारियों को कार्यालयी कार्य राजभाषा हिंदी में करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित भी करता है, इस पत्रिका का प्रकाशन भी इस कड़ी का एक हिस्सा है । इस प्रकार के प्रकाशन से विश्वविद्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों में हिंदी लेखन को बढ़ावा मिलेगा और उनकी साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रतिभाओं को उजागर करने का अवसर प्राप्त होगा ।

मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका की स्तरीयता बनी रहेगी । पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं प्रकाशन में सहयोगी सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी शुभकामनाएँ ।

(प्रो. योगेश सिंह)
कुलपति

प्रधान संपादक की कलम से.....

संदेश

यह जानकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि दिल्ली विश्वविद्यालय की गृह पत्रिका "ज्ञानालोक" के प्रवेशांक का प्रकाशन किया जा रहा है । जिसमें विश्वविद्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों द्वारा राजभाषा हिंदी में स्व-लिखित कविता, कहानी, संस्मरण इत्यादि का प्रकाशन किया जा रहा है । इससे विश्वविद्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपनी हिंदी लेखन क्षमता को प्रदर्शित करने का अवसर मिलेगा और कार्यालयी कार्य में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा ।

मैं संपादक मंडल, राजभाषा प्रकोष्ठ तथा पत्रिका प्रकाशन हेतु अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों द्वारा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में दिए गए योगदान के लिए धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी गृह पत्रिका "ज्ञानालोक" का नियमित प्रकाशन किया जाएगा ।

(प्रो. पूरन चंद जोशी)
सम-कुलपति

मुख्य संरक्षक की कलम से.....

संदेश

मुझे यह जानकार बहुत खुशी हो रही है कि दिल्ली विश्वविद्यालय की गृह पत्रिका "ज्ञानालोक" के प्रवेशांक का प्रकाशन किया जा रहा है । पत्रिका प्रकाशित करने का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों में छिपी हिंदी लेखन प्रतिभा को उजागर करना है । इस प्रकार के प्रयासों से अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों में हिंदी लेखन को लेकर व्याप्त झिझक दूर होगी जिससे कार्यालयी कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा । इस प्रकार के प्रकाशन विश्वविद्यालय में संघ की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं ।

मैं गृह पत्रिका "ज्ञानालोक" के प्रकाशन को सफल बनाने हेतु अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों और संपादक मंडल, राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में किए गए सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि इस प्रकाशन कार्य को भविष्य में भी जारी रखा जाएगा ।

(डॉ. विकास गुप्ता)
कुलसचिव

संदेश

मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है कि दिल्ली विश्वविद्यालय की गृह पत्रिका "ज्ञानालोक" के प्रवेशांक का प्रकाशन किया जा रहा है । विभिन्न लेखकों ने अपनी रचनाओं के द्वारा भिन्न विषयों के प्रति पाठकों के ध्यान को आकर्षित करने की कोशिश की है उनका यह प्रयास काफी सराहनीय है और इसमें बहुत से विषयों को गौण और सूक्ष्म तरीके से प्रस्तुत किया गया है। मुझे पूरा विश्वास है कि पाठकगण इससे लाभांवित होंगे। भविष्य में वे अपना सुझाव संपादक मंडल को भेज सकते हैं। जिससे भविष्य में आने वाले अंकों को और भी अच्छा प्रस्तुत किया जा सके। हृदय से हम आप सभी को शुभकामनाएं देते हैं कि आप प्रगति के पथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहें और अपनी क्षमताओं तथा प्रतिभा का समुचित प्रयोग कर समाज तथा देश को लाभांवित करते हैं। यहां मैं यह भी कहना चाहूंगा कि हिंदी राजभाषा होने के नाते अतिरिक्त बहुल जनसंख्या की मातृभाषा भी है और इस कारण से वास्तविकता तो यह है कि विषय-वस्तु को समझने के लिए यह उन लोगों के लिए बहुत सरल एवं सहज माध्यम का कार्य करती है। यह अपनी भाषा है इसे अपनी भाषा के रूप में ही रहना है अपनाने का तो प्रश्न ही बेईमानी लगता है।

मैं गृह पत्रिका "ज्ञानालोक" के प्रकाशन को सफल बनाने हेतु अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों और संपादक मंडल, राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में किए गए सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि इस प्रकाशन कार्य को भविष्य में भी जारी रखा जाएगा ।

(गिरीश रंजन)
वित्त अधिकारी

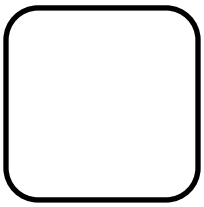

संपादकीय.....

योग से ही संभव मानव की आंतरिक शक्तियाँ

मनुष्य को एक अच्छे रास्ते पर चलने के लिए उसके अन्दर छिपे हुए काम,क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसी विकृतियां सदैव रोकती है। वह व्यक्ति सत्य-असत्य के मार्ग का चयन अपनी बुद्धि से नहीं कर पाता और विवेकहीन होकर गलत संगत में पड़कर जीवन को बर्बाद करने लगता है। क्रोध और द्वेश की अग्नि में जलकर चिन्तन की शरण छोड़कर चिन्ता में अपने शरीर का नाश कर देता है। फिर वही कहावत यथार्थ होती है कि अब पछताए क्या होवत है, जब चिडिया चुग गई खेत।

ईश्वर की एक सुन्दर कृति के रूप में सर्वश्रेष्ठ योनि मनुष्य की होती है। इसके अन्दर पंचतत्व, अग्नि, वायु, पृथ्वी, आकाश,जल के साथ पाँच प्राण-प्राण अपान, व्यान, समान, उधान के रूप में शरीर के अन्दर हर पल अन्न के रस के रूप में खून, पानी, वीर्य, मल आदि में परिवर्तित करके जीवन देती रहती है। शरीर के अन्दर ईश्वर की एक सुन्दर कृति को आप देख सकते हैं। यह रचना साधारण नहीं है। इसे देखकर ईश्वर के होने का भी प्रमाण होता है। इस सृष्टि की सृजन में जड़, चेतन रूपी जगत में जीवात्मा के कर्मक्षेत्र की युद्धस्थली है। सृष्टि के सृजन में जीवात्मा यानि फलभोक्ता, परमात्मा मतलब निर्माता, प्राकृतिक यानि पदार्थ (ईश्वर, प्रकृति, आत्मा) के पूर्ण सहयोग से ब्रहमांड की रचना ईश्वर करता है। मनुष्य के अन्दर जब यह ज्ञात हो जाता है कि मैं जीवात्मा का चलता फिरता घर हूँ। मेरी उपयोगिता प्राकृतिक रूपी है। मेरा पिता परमात्मा है। जो मेरे साथ सदैव रहता है। दुनिया के सब साथी साथ छोड़ देते है। लेकिन मृत्यु उसके साथ सदैव रहती है। आखिरी समय अपने साथ लेकर जाती है। यह ज्ञान मानव को योगदर्शन कराती है। जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणयाम, प्रत्याहार, ध्यान, समाधि की सच्ची मार्गदर्शन पर मनुष्य के अन्दर आत्मिक ज्ञान पैदा होकर देश के कल्याण रूपी मार्ग पर चलने लगेगी। जिस मार्ग का पथिक पहले शारीरिक, फिर आत्मिक उन्नति के बाद सामाजिक उन्नति की तरफ बढ़ेगा। उसके सामनेलोभ, मोह, अहंकार, द्वेश, घृणा जैसी विकृतियां कभी नहीं घेर सकेगी। एक बार की बात है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सन् 1868 में रायबरेली में एक सभा को आत्मिक ज्ञान की शिक्षा दे रहे थे। उसमें कुछ सम्प्रदाय की कुरीतियों के बारे में बोलने लगे। उस समय अग्रेंजो का राज था। लोग घबराने लगे और समय को फिर उनके-विश्राम स्थल पर जाकर कुरीतियों के बारे में न बोलने के लिए प्रार्थना करते हुए कहा कि, यहाँ के कलेक्टर एवं न्यायधीश नाराज होकर आपको हवालात में बन्द कर देंगे। स्वामी जी मुस्कराते हुए दूसरे दिन भरी हुई सभा में यह चर्चा लोगों को सुनाते हुए बोले कि मैं सदासत्य ही बोलूंगा चाहे मेरे शरीर को मोमबत्ती की तरह जला दिया जाए। मैं ईश्वर के अलावा किसी से भी नहीं डरता हूँ। क्योंकि स्वामी जी एक योगी सन्यासी थे। कहने का मतलब यह है कि जब मनुष्य को अपने अन्दर छिपी हुई अंतर्शक्तियों की शक्तिजागने लगेगी तो वह व्यक्ति कभी भी किसी के साथ अन्याय, अत्याचार, आडम्बर, लूट, बलात्कार, देशद्रोह, घोटाला नहीं कर सकेगा।

इसलिए गीता का ज्ञान का सार चारों वेदों में निहित है। वही कर्मकाण्ड की ज्ञान है। “नैनं छिन्दन्ति” वाले श्लोक से आत्मा के शक्ति का पता चल जाता है। फिर क्यों अन्याय करेगा। इसलिए प्रत्येक मानव की उत्थान के लिए स्कूलों में योग का ज्ञान अनिवार्य होना चाहिए तभी देश महान बनेगा और मानव का कल्याण होगा।

हमारे देश का इतिहास सूरवीरों की कथाओं से भरा पड़ा है। यह देश ऋषि-मुनियों, वीरों, देशप्रेमियों की साहसिक कारनामों से विश्वविख्यात है। इसलिए इस देश को सोने की चिडिया कहा जाता है। हजारों वमयवनों एवं बाहरी आक्रमणकारियों के द्वारा हमारे देश की संस्कृति पर गहरा आघात हुआ। लेकिन नींव इतनी मजबूत थी कि

आज हम सब अपने पूर्वजों की शहादत को याद करते रहते हैं। युगपुरूष श्रीराम, श्रीकृष्ण से लेकर महर्षि कणाद, कपिल, गौतम बुद्ध, महावीर, गुरूनानक, महर्षि दयानन्द, विवेकानन्द इत्यादि की शहादत को हम सब आज याद करते है। पूरे विश्व में मानव को श्रेष्ठ श्रृंखला में अपना भारत आर्यावर्त प्रसिद्ध है।

विभाकर चतुर्वेदी,
खेल परिषद

>>>>>@<<<<<

रीढ़ विकृति एवं उपाय

रीढ़ शरीर का आधार स्तम्भ है। इसी पर शरीर का पूरा ढाँचा टंगा हुआ है। इसमें 26 गोटियाँ हैं 7 गर्दन में,5 कमर में,12 पीठ में तथा वस्ति प्रदेश की2 गोटियाँ है। इनके बीच एक-एक गद्दी रूपी जैल होता है जिससे इधर-उधर मुड़ने का लोच बना रहती है। इसी मेरूदण्ड़ से इड़ा, पिंगला तथा सुषुम्ना नाड़ियाँ निकलती है तथा सारा नाड़ी जाल इसी से प्रभावित रहता है। यदि रीढ़ कड़ी एवं लोच रहित है तो हम रोगी हैं, वृद्ध हैं चाहें 18 वर्ष के हों। हमारा स्वास्थ्य इस रीढ़ पर टिका है।

आजकल भाग-दौड़ भरी जिंदगी में अधिकतर लोग रीढ़ दोष से ग्रसित रहते हैं जैसे सरवाईकल, स्पॉण्डिलोसिसकमर दर्द। इन विकृतियों के उपचारकेलिए डॉक्टरों के चक्कर लगाते हैं। दवाइयाँ खाते हैं क्षणिक लाभ तो होता है किंतु विकृति अपने स्थान पर बनी रहती है।

रीढ़ के दोष को दूर करने के लिए नियमित भास्त्रिका, अनुलोम-विलोम एवम् आसन (ताड़ासन, कमर चक्रासन,, भुजंगासन, शलभासन, मंकरासन) अभ्यास किया जा सकता है। इनसे ही रीढ़ दोष पूर्णत: समाप्त हो जाता हैं।

आशा गार्चा,
अनुभाग अधिकारी

>>>>>@<<<<<

पहाड़ों और झीलों के प्रदेशों की शैक्षिक-यात्रा: एक वृत्तांत

"उच्चतम शिक्षा वह है, जो हमें सिर्फ जानकारी ही नहीं देती, बल्कि हमारे जीवन को समस्त अस्तित्व के साथ सद्भाव मे लाती है।"

- रविंद्रनाथ टैगोर

शिक्षा सिर्फ पुस्तकों तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह हमारे जीवन चक्र का एक अहम हिस्सा है । हम प्रतिपल कुछ नया सीखते हैं । हमारा हर अनुभव हमें शिक्षित करने के साथ-साथ हमें अधिक जागरूक और सबल बनाता है । हम सभी कभी न कभी किसी न किसी यात्रा का अनुभव कर चुके हैं और उससे जुड़े हर पल को अगर याद करें तो उस अनुभव से हम सभी किसी न किसी स्वरूप में शिक्षित हुए हैं । यात्रा और शिक्षा का यह संगम अपने आप में काफी अनूठा और महत्वपूर्ण है। इसकी महत्ता इसलिए भी अधिक है क्योंकि यात्रा हमें एक ऐसा अवसर देती है जहाँ हम अपने अर्जित किए गए ज्ञान को वास्तविक जीवन से रूबरू करवाते हैं और साथ ही एक नये ज्ञान की अनुभूति करते हैं । ऐसा ही एक अवसर हमें दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग द्वारा प्राप्त हुआ। चलिए वर्ष 2018 में 7 राज्यों एवं केंद्र-शासित प्रदेशों, 11 शहरों एवं कस्बों, 17 स्थानों, 5 नदियों, 3 झीलों, 5 तारीखों, 4 रातों, 3 दिनों, 6 यातायात के साधनों एवं बहुत ही मित्तव्ययता के साथ की गयी अपनी यात्रा के बारे में आपको बताते हैं । हम शिक्षा में स्नातक और स्नातकोत्तर कर रहे 11 छात्र और छात्राओं को हमारे 2 सहायक-प्राध्यापकों के साथ यह अद्भुत अवसर प्राप्त हुआ। अप्रैल, 2018 के प्रथम सप्ताह में इस पाँच तारीखों, चार रातों और तीन दिनों की यात्रा में 7 राज्यों एवं केंद्र-शासित प्रदेशों के भिन्न-भिन्न शहरों और कस्बों का अनुभव प्राप्त कर हम पुनः दिल्ली लौटे। इस यात्रा का मुख्य उदेश्य था कि हम उत्तर भारत के राज्यों का वास्तविक अनुभव प्राप्त करें और इसके साथ ही हम वहाँ के रहन सहन को समझें । हमारा सफर पुरानी दिल्ली रेल्वे स्टेशन से शुरू हुआ, जहाँ हम सभी तेरह लोग एकत्रित हुए। रात भर रेल की यात्रा करने के बाद हम हरिद्वार पहुंचे, जहाँ हमने धर्म के एक ऐसे स्वरूप को समझा जो समाज को एक सूत्र मे बांधे हुए है। उसके बाद ऋषिकेश में गंगा आरती का अनुभव यह जताने भर के लिए पर्याप्त था कि मनुष्य और प्रकृति एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और एक को अपने जीवन के लिए दूसरे को संरक्षित कर्ण ही करना होगा। गंगा की सफाई होती देख यह एहसास भी हुआ कि प्रकृति से हमने सिर्फ लिया ही लिया है, दिया कुछ नहीं। गंगा का सूखता जलस्तर, जिसकी हम खबरें मात्र समाचार-पत्रों में पढ़ लेते हैं, उसे प्रत्यक्ष रूप से देखकर प्रकृति संरक्षण की महत्ता का एहसास भी हुआ। इसके बाद हम सभी राज्य परिवहन की बस में सवार होकर देहरादून पहुंचे। देहारादून में हमने धनौल्टी में देवदार के पेड़ों से भरे इको-पार्क में विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों का लुत्फ़ उठाया। इस दौरान हमने वहाँ के स्थानीय लोगों से बात की और उनके रोज़मर्रा के कामों और जीवनयापन के तौर-तरीकों को समझा। सहस्त्रधारा और मंसूरी में ठंडे मौसम और दार्शनिक स्थलों का दौरा काफी मज़ेदार रहा। देहरादून के बाद हम सभी ने अगली रात पोंटा साहिब गुरुद्वारे में गुज़ारी। गुरुद्वारे में हममें से कुछ लोगों ने लंगर सेवा प्रदान की । यह सेवा-भाव सीखना, जो हर जाति-धर्म, ऊँच-नीच से परे था, हमें वसुधैव-कुटुंबकुम का एहसास करा गया। वास्तव में देखा जाए तो शिक्षा भी हमें यही सद्भाव सिखाती है जो हमारे समाज में ऐसे धार्मिक स्थलों पर नज़र आ जाता है।

गुरुद्वारे से प्रात: गुरुग्रंथ साहिब के दर्शन कर हम सभी हिमाचल में स्थित रेणुका झील और रेणुका मंदिर धाम के लिए निकाल गए। रेणुका झील और उसके आस-पास के पहाड़ों का सौन्दर्य देखते ही बनता है। यहाँ से हम सभी चंडीगढ़ के लिए निकले जहाँ थोड़ा-सा घूम-फिर कर हम सभी अम्बाला के लिये बस से रवाना हुए। चंडीगढ़ शहर की संरचना काफी लुभावनी और उच्चस्तरीय नज़र आती है। वहाँ के पंजाबी भोजन का लुत्फ़ उठाना अपने आप में एक अविस्मरणीय अनुभव रहा। अम्बाला से पुरानी दिल्ली तक का ट्रेन का सफ़र और सफ़र के दौरान बाकी यात्रियों के साथ अपने अनुभव साझा करना और उनके यात्रा के अनुभवों को सुनना मज़ेदार रहा। हमारा यह 7 राज्यों एवं केंद्र-शासित प्रदेशों, 11 शहरों एवं कस्बों, 17 स्थानों, 5 नदियों, 3 झीलों, 5 तारीखों, 4 रातों, 3 दिनों, 6 यातायात के साधनों एवं बहुत ही मितव्ययता के साथ किया गया सफ़र, जो कि 5 अप्रैल, 2018 को पुरानी दिल्ली रेल्वे स्टेशन से शुरू हुआ और 9 अप्रैल,2018 की सुबह वहीं पर सम्पन्न हुआ, अपने आप में जिंदगीभर न भूलने वाला एक अतुलनीय एवं अनूठा अनुभव रहा ।

इस यात्रा के अनुभव ने हमारे ज्ञान को एक वास्तविक रूप प्रदान किया। हमारे सहायक-प्राध्यापकों की मेहनत और साथ से यह यात्रा संभव हुई। उन्हीं के मार्गदर्शन से ही हम सभी एक इकाई की तरह एक साथ खड़े रहे। इस यात्रा के दौरान हम सभी ने कुछ न कुछ सीखा चाहे वह धर्म का स्वरूप हो या उसका महत्व जो हम सभी समाज को बांधे हुए है । हमने प्रकृति और मनुष्य के बीच के उस द्वंद्व को सूखती गंगा के रूप में देखा और उसे संरक्षित करने की जरूरत को समझा। इस यात्रा ने शिक्षा विभाग से मिली सीखों को अमल में लाने का अवसर दिया। हमने इस यात्रा मे पर्वतीय क्षेत्रों मे रहने वाले लोगों की संस्कृति और रहन-सहन को समझने का प्रयास किया, साथ ही उनकी कठिनाइयों को भी समझा। हमने यह महसूस किया कि यात्रा मात्र रोमांच या मनोरंजन तक सीमित नहीं है बल्कि यह जीवन जीने को नए मायने देती है। यात्रा के दौरान अंजान लोगों से मिलना और उन्हे उनके परिपेक्ष्य में जानना हम सभी में सामाजिक सौहार्द उत्पन्न करती है।

यात्रा एक सफ़र है "कुछ खो कर खुद को पा लेने का"। हम अपने अंदर भरे उस भय, द्वेष, पीड़ा, बुराई को खोकर अपने ही सुदृढ़ और मजबूत व्यक्तित्व को पा लेते हैं। यात्रा कुछ नया सीखने और परिपक्वता भरे वास्तविक व्यक्तित्व को पा लेने की प्रक्रिया है।

वरीश एवं विनोद कुमार कंवरिया
शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय

>>>>>@<<<<<

महिला और समाज

हमारा समाज पितृसत्तात्मक समाज है। हमारे समाज में पुरुषों को महत्वपूर्ण माना जाता है। महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम महत्वपूर्ण माना जाता है। जबकि पुरुष और महिला सर्व प्रथम इंसान है और इस देश के समान नागरिक हैं। लैंगिक आधार पर अंतर संवैधानिक रूप से नहीं किया जा सकता है। लेकिन पुरुषों ने अपनी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए समाज मे हर चीज का बंटवारा अपने पक्ष किया है। पुरुष सिर्फ कमाएंगे। घर के काम में हाथ नहीं बटाएंगे। घर के कामों की पूरी जिम्मेदारी औरत पर लाद दी गई है। खाना, साफ-सफाई, कपड़े, बच्चों और बूढ़ों के देखभाल सब कुछ महिलाओं के जिम्मे कर दिया है। पुरुष आराम से खाएगा, आदेश देगा, खाली समय पर टी.वी. देखेगा या फिर ताश खेलेगा। कामकाजी महिलाएँ घर का चूल्हा-चौका, साफ-सफाई, खाना-पीना, सब कुछ करेंगी फिर नौकरी पर जाएगी। महिलाओं का दोहरा शोषण हो रहा है। यही सब कुछ उनके बच्चे भी देखते हैं। बेटा बाप का रोल करता है और बेटी माँ का रोल सीखती है और फिर वे भी इसे आगे बढ़ाते हैं। बेटी घर पर माँ के साथ काम करती है लेकिन बेटा कुछ नहीं करता है और एक दिन आवारा बन जाता है।

हमारे समाज में स्त्री और पुरुष दोनों का घर के काम में बराबर का हिस्सा होना चाहिए। दोनों की बराबर की जिम्मेदारी होनी चाहिए ताकि उनके बच्चे (लड़का/लड़की) उनसे सीखें। मेरे पड़ोस का एक उदाहरण। बड़ा भाई ग्यारहवीं में है, छोटा भाई पाँचवीं में और बहन छठी में है। छोटा भाई बैठा-बैठा अपनी बहन से कहता है कि चल मेरा बैग ला मुझे होम वर्क करना है। उसकी बहन प्राची कहती है कि मैं भी तो अपना होम वर्क कर रही हूँ अपना बैग खुद ले आ। ऐसा सुनकर भाई चीखता है। मम्मी ये देख, प्राची मेरा बैग नहीं दे रही है। मुझे होमवर्क करना है। घर के किसी भाग से उसकी मम्मी आती है और प्राची को दो थप्पड़ जड़कर कहती है कि भाई का कहना नहीं मानती। जा बैग लेकर आ। प्राची रोती हुई बैग ले आती है। अगले दिन मेरे दोनों बच्चे, प्राची और उसके छोटे भाई अभिषेक के साथ खेल रहे थे। तभी उसका बड़ा भाई, जोकि ग्यारहवीं में है, घर आता है और माँ से कहता है कि उसे भूख लगी है। उसकी माँ प्राची को दस रूपए ब्रैड लाने के लिए देती है। वह दुकान से आराम-आराम से आती है। उसका भाई घर पर चिल्लाता है मुझे भूख लगी है और प्राची अभी तक ब्रैड लेकर नहीं आई। इतने में उसकी माँ प्राची को देखने दुकान की तरफ जाने लगी। प्राची ब्रैड लेकर आ रही थी। उसकी माँ ने उसे सड़क पर ही एक थप्पड़ मारा और कहा कि तेरे भाई को भूख लगी है और तुझे खेलने की लगी है। मेरी नौ साल की बिटिया ने ये सब देखा और फिर वह मुझसे बोली मम्मी ये सभी प्राची को इतना परेशान क्यों करते हैं? ये सब कुछ प्राची से ही करवाते हैं। जैसे खाना बनाना, कपड़े धोना आदि। अभिषेक और उसका बड़ा भाई कुछ भी नहीं करते। मैंने अपनी बिटिया को बताया कि यदि ये तीनों कोई भी काम आपस में मिल-बाँट कर करते तो सब को पढ़ने, खेलने और अन्य काम करने के मौके मिलते और इन सभी में प्यार भी रहता। इस व्यवहार से क्या प्राची के मन में अपने भाइयों के प्रति प्यार रहेगा? यह सोचने की बात है।

अक्सर ये कहा जाता है कि औरत ही औरत की दुश्मन होती है। कई मायनों मे यह बात सही भी है। कई महिलाएँ यह कहते हुए मिल जाएंगी कि वह भाई है, पति है या बेटा है, जा उसके लिए गरम-गरम रोटी बना दे। चाहे वह पुरुष आवारा-गर्दी करके ही क्यों न आ रहा हो। क्या किसी बहन, पत्नी या बेटी को गरम रोटी खाने का मन नहीं करता? क्या स्त्री हमेशा दास की तरह रोटी बनाने के लिए ही हैं? हर इंसान को अपने काम खुद करने चाहिए।

स्त्री और पुरुष में प्रकृति ने कोई अंतर नहीं किया है दोनों बराबर हैं। उनमें सिर्फ दो अंतर है एक, स्त्री में प्रजनन की क्षमता होती है तथा दूसरा वे स्तनपान करा सकती हैं। इसके अलावा कोई और अंतर नहीं। बाकी सारे

अंतर समाज द्वारा बनाए गए हैं। वो भी पितृसत्तात्मक समाज द्वारा, जिसमें पुरुष को मुखिया बना दिया गया है। पुरुष ने अपनी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए सारे नियम कानून बनाए है। अनेक त्योहारों में महिलाओं द्वारा पुरुषों की पूजा करवाई जाती है। जैसे रक्षा-बंधन, भाई-दूज, करवा-चौथ आदि। इनमे महिलाओं द्वारा पूजा की जाती है,किसी पुरुष की लंबी उम्र के लिए। कोई भी ऐसा पर्व नहीं बनाया गया जिसमें बहनों (स्त्री जाति) की पूजा की जाती हो या उनका सम्मान व इज्जत की जाती हो। अनपढ़ महिलाओं के साथ-साथ सभी पढ़ी-लिखी महिलाएँ भी महिला विरोधी त्योहारों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेती हैं और अपनी पितृसत्तात्मक मानसिकता का प्रदर्शन करती हैं। स्त्रियाँ अब भी दास बनाने की इन रणनीति को समझने मे सक्षम नहीं हुई हैं। जब तक स्त्रियाँ दास बनाने की रणनीतियों का प्रतिकार नहीं करती तब तक उन्हें अपने नागरिक होने का सच्चा अर्थ पता नहीं चलेगा। इसलिए नागरिकता को उसके पूरे अहसास के साथ जीने के लिए दास बनाने की रणनीतियों को न कहना सीखना होगा।

आशा रावत,
कनिष्ठ सहायक

>>>>>@<<<<<

प्रकृति एवं मानव

प्रकृति की सुन्दरता ही निराली है, आओं अनुभव करें। एक मनोहारी स्थल। जहाँ साँस लेती छोड़ती घास। हवा का इठलाकर गोते लगाना। सुनो, अरे सुनो भाई, थोड़ा उधर मछलियों का गीत गुँजन साथ ही पानी में नाचना। बीच-बीच में चमकीली रेत का आँख मिचोली करना। रात की रानी का आँगन्तुकों पर इत्र छिड़कना। चाँदनी का जमीन को स्पर्श करना। पतंगों का चारों ओर रोशनी फैलाना। जानवरों की अलग-अलग टोलियों का इधर-उधर घूमना। चिटियोंकाकदम से कदम मिलाकर अपने घरों की ओर जाना। सुनो! सुनो कौन कह रहा है? कलियाँ खिलखिलाकर हँसेगी। शाखायें हल्के-हल्के गुनगुना रही होगी।

अरे! यह क्या हुआ? चाँदनी कहाँ गायब हो गयी? यह कौन चला आ रहा है? रोको,रोको, वृक्षों कोमत काटों। घास कोमत कुचलो। जल की धारा मत बदलो, जीवन वीरान हो जायेगा। कौन तारकौल और कंक्रीट की सड़के बना रहा है? कौन वाहन से निकलने वाली गैस छोड़ रहा है? कौन इस सुन्दर वातावरण को नष्ट कर रहा है?

आओ, फिर अनुभव करें। जानते हो, प्रकृति की सुन्दरता ही निराली होती है। उस सुन्दर मनोहारी स्थल की तरह मनुष्य का शरीर, जिसमें नन्हीं-नन्हीं कोशिकायें जन्म लेती हैं और पुरानी? दूर ताँरो में समा जाती है। स्वच्छ हवायें शरीर में गोता लगाने को आतुर रहती हैं। नन्हा दिल रक्त की पूर्ति शरीर में करता है। छोटा-सा पेट मजदूरों की तरह भोजन को तोड़ने में लगा रहता है। लीवर ऊर्जा को भंडारित करने में अपनी जिंदगी लगा देती है। किड़नी रक्त से मैला कचरा अलग करने में लगी रहती है।

सभी अंग अपने-अपने काम में मग्न है। अचानक, अरे! यह कौन-सा दूषित पदार्थ शरीर में आ रहा है? कौन प्रकृति की व्यवस्था को चुनौती दे रहा है? कौन तम्बाकू और उसके उत्पाद का सेवन कर रहा है? कौन मिलावटी पदार्थ शरीर में पहुँचा रहा है? रोको, रोको, इसे। ये नन्हें अंग मर जायेंगे। कभी आपने सोचा है प्रकृति की सुन्दरता को नष्ट करने वाले खतरनाक तत्व केवल प्रकृति को ही नष्ट नहीं कर रहे हैं, बल्कि वह हमें भी मार रहे हैं। तम्बाकू और उसके उत्पाद तथा मिलावटी पदार्थो में क्या मिला होता है? कँक्रीट के पीसे टुकडें, कीड़े मारने वाले पदार्थ निकोटिव

चींटी मारने वाला पदार्थ आर्सेनिक सड़क को बनाने में प्रयोग तारकोल, फर्श को साफ करने में उपयोगी अमोनिया, रेडियोएक्टिव पदार्थ, वाहन से निकलने वाली दमघोटू गैस, गैस चेम्बरों में प्रयोग की जाने वाली जहरीली गैस हाईड्रोजन साइनाइड और न जाने 400 से अधिक खतरनाक पदार्थ। इनका सेवन एक-एक दिन में कई बार किया जाये तो शरीर के नन्हें अंगों की हालत कैसी होगी। जीवन अमूल्य है, प्रकृति की बनायी वस्तुओं से छेड़खानी मत करो, चाहे मनोहारी स्थल हो अथवा शरीर।

शशि कुमार शर्मा,
मुक्त शैक्षणिक विद्यालय

>>>>>@<<<<<

फलसफ़ा वक्त का

वक्त जो किसी के लिए रूकता नहीं, वक्त जो किसी का इंतजार नहीं करता, वक्त जो किसी का साथी नहीं, वक्त जो किसी का संगी नहीं, वक्त जिसको पकड़ने के लिए इंसान रूपी परिन्दा सदियों से उड़ता फिर रहा है, वक्त जिसकी मार बहुत बुरी होती है, वक्त जिसके हाथोंइंसान मिटटी का खिलौना है, वक्त जिसका अगर साथ दिया जाए तो उससे बढ़िया कोई साथी नहीं, वक्त जो हर उस व्यक्ति का साथ देता है जिसने उसका पूरा-पूरा प्रयोग किया हो, वक्त जो किसी का भाई नहीं, किसी का पिता नहीं, किसी का दोस्त नहीं, किसी का सगा नहीं, वक्त जिसका आज की दुनियाँ में साम्राज्य है, वक्त जो आज का बेताज़ बादशाह है, वक्त जो आज का देवता है, वक्त जो आज का भगवान है। वक्त, वक्त, वक्त, वक्त.....।

क्या है यह वक्त? कौन है यह वक्त? कहाँ से आया, किसके लिए आया, किसलिए आया, क्यों आया वक्त, वक्त, वक्त, वक्त.....।

वक्त जिसने मेरा साथ नहीं दिया, वक्त जिसने हमेशा मुझे धोखा दिया, वक्त जिसे पकड़ने के लिए मैं आज भी उसके पीछे भागती हूँ, वक्त जो आज तक मेरी पकड़ में नहीं आया, वक्त जिसने कभी मेरा इंतजार नहीं किया, वक्त जो कभी मेरा नही हो सका, वक्त, वक्त, वक्त, वक्त.....।

क्या मैं कभी उसे पकड़ सकूंगी? क्या वह कभी मेरा बन सकेगा? अगर हाँ, तो कब? आखिर कब मैं कह संकूगी कि वक्त मेरा है। वह मुझे छोड़कर नहीं जाएगा (क्या ऐसा हो सकेगा?) शायद नहीं, क्योंकि वक्त कभी हमेशा के लिए किसी का नहीं हुआ। हमने उसका साथ देना है उसने हमारा नहीं और जो वक्त का साथ देता है वही आगे बढ़ता है। जिसने इसका दामन पकड़ा वही जिंदगी में सफल हुआ जिसने इसे भागने दिया वो असफल रहा यही वक्त का फलसफ़ा है।

वीनू भाटिया,
वरिष्ठ निजी सहायक

मंजिल पानी है

कदम बढ़ाए चल ओ साथी कदम बढ़ाए चल।

मुश्किलें तो आएँगी सामने तेरे
पर कर सामना बिना डरे बिना थके
पायेगा तू मंजिल अपनी-अपनी कदम बढ़ाए चल।

काम, क्रोध, लोभ और माया, सब रोकेंगे राह तेरी
बाधाएँ आएँगी मुश्किलें लाएँगी
पर बिना झुके, बिना रूके कदम बढ़ाए चल।

राह है कठिन,मंजिल है दूर,
पैर तेरे थक चले, साँस है थमने लगी
पर देख सामने है मंजिल खड़ी
हिम्मत न हार कदम बढ़ाएँ चल।

लक्ष्य है तेरा, जो मंजिल है तेरी
नहीं भटकना याद रखना है उसको ही
आशाओं के दीप जला, कदम बढ़ायें चल।

पग ठोकर खाकर भी जो फिर से खड़ा है होता
पूरा करता अपना सपना वहीं विजयी है होता
न ठोकरों से डर, कदम बढ़ाए चल।

माना कि तू कमज़ोर है, नहीं साथ तेरे कोई खड़ा
पर तेरा भगवान है, इस दुनियाँ में सबसे बड़ा
रख विश्वास, मत डगमगा, कदम बढ़ाए चल।

कदम बढ़ाए चल ओ साथी कदम बढ़ाए चल।

वीनू भाटिया,
वरिष्ठ निजी सहायक

>>>>>@<<<<<

महिला सशक्तिकरण और मानव अधिकार

मातृ देवो: भव:, आचार्य देवो: भव: का कथन शास्त्रवित मान्य है। वेदों में मातृशक्ति का स्थान सर्वोपरि है। उसी कथन को आगे बढ़ाते हुए महर्षि मनु जी ने अपनी मनुस्मृति में बहुत अच्छी तरह समझाया है। "यत्र पुज्यन्ते नारी रभन्ते तत्र" देवता के मार्ग दर्शन को यथार्थ रूप से दिखाये हैं। जो आदिकाल चलती आ रही है। मां के स्थान को सृष्टि के रूप में माना जाता है। जो ममतामयी अनेक नाम से जानीजाती है और भगवान के नाम को चरितार्थ किया है। जैसे गंगा मां, भारत मां,वेदमाता,गऊ माता, गीतामाता,गायत्रीमाता आदि ममता के आधार पर माँ के नाम से जाने जाते हैं।

कहावत है कि बच्चों को जीवन देने में अगर माँ संस्कारी व शिक्षित है। तो सन्तान श्रेष्ठ व प्रतापी होगी। उदाहरणके लिए जितने महापुरूष धरती पर पैदा हुए उनके पीछे उनकी माँ की तपस्या व संस्कार हैं। माँ का स्थान सर्वोपरि होता है। आज जितने महापुरूष हुए वह अनेक-अनेक रूप में माँ की गुणगान किये है। लेकिन महर्षि मनु से अच्छी तरह कोई नहीं समझ सका। नारी के शिक्षित संस्कारित होने से मानव निर्वाण के साथ दो कुल का मान-सम्मान बढ़ता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास से लेकर आठवें समुल्लास तक माँ के द्वारा सन्तान उत्पत्ति व निर्वाण की पूरी व्याख्या की है। इसलिए वैदिक काल में नारियों को शस्त्र व शास्त्र का ज्ञान पुरूषों के बराबर दी जाती थी। इतिहास गवाह है कि महारानी कौशल्या, गार्गी, सुमित्रा, दुर्गावती, महारानी चेनेभ्भा, रानी लक्ष्मीबाई, दासीपन्ना, अन्य हजारों माताओं ने राजसूर्य यज्ञ से लेकर शास्त्र शस्त्र की नीति को ग्रहण करके भारत के गौरव को बढ़ाया है। अंग्रेजो, मुगलों की हुकूमत को अपने पैरों से कुचला और अपना नाम अमर कर दिया है।

महर्षि दयानन्द ने इसलिए बाल विवाह, दहेज प्रथा, सतीप्रथा, नारी अशिक्षा के घोर विरोधी थे। लोगों ने कहा था कि स्त्री सूद्रों नाधियताभ् मतलब स्त्रियों और सूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है। महर्षि ने उन्हें कड़ा जवाब देते हुए नारियो को वेद पढ़ने के साथ यज्ञोपवीत पहनने व यज्ञ करने का भी अधिकार है। इसलिए आज आर्यसमाजो में अनेक महिलाएँ उस और चल रही हैं। जहां पर नारियो के चहुमुखी विकास के लिए शारीरिक, आत्मिक व समाजिक उन्नति के रास्ते दिखाये जा रहे हैं। लाखों लोग आज उसी से लाभान्वित हो रहे हैं और अच्छे परिवार की निर्वाणकीजारही है। आज हम सब मिलकर मातृ सशक्तिकरण के मार्ग को मजबूत व सम्मान देना चाहते हैं तो उनका सम्मान करना सीखें। उनके ऊपर होने वाले अत्याचार को मिलकर समाप्त करें। न्याय, शिक्षा, सुरक्षा, सम्मान दें व दिलावे। सरकार व प्रत्येक मानव को चाहिए कि भ्रूण हत्या, दहेज लोभियों व बलात्कारियों को मृत्यु दंड़ जैसे कठोर कानून बनें जिससे समाज में नारियों के उत्पीड़न पर सवाल न उठे और इनका सम्मान बना रहे। साथ ही योग व नैतिक शिक्षा को प्रत्येक विद्यालयों में शक्ति से लागू करे। क्योंकि योग से आत्यिक ज्ञान, शारीरिक व अध्यात्मिक ज्ञान मिलता है।

शरीर क्या है? आत्मा क्या है? प्राकृति क्या है? ईश्वर क्या है? यह सब ज्ञान योग से प्राप्त होगें तो हर व्यक्ति शरीर की बनावट व उसका महत्व के ज्ञान को जानकर गलत कार्य नहीं करेगा। जैसे हमारे भारत के इतिहास में आदिकाल से चला आ रहा है। आज मानव को अध्यात्मिक व शारीरिक ज्ञान की अल्पज्ञता के कारण शरीर को सब

कुछ मान बैठा है। इसलिए अत्याचार, आतंक, बलात्कार जैसी बुराइयाँ फैल रही है। प्रत्येक मानव को जीनेका अधिकार है। उसे सुधारने व सुधरने का मौका मिलना चाहिए। लेकिन वह भी वैसे ही अत्याचार व दुष्टता जानकर की जाने पर उसे कठोर दण्ड़ व्यवस्था होनी चाहिए। ऐसा इतिहास गवाह है। चाहे रामायण काल हो या महाभारत काल हो, दोनों समय में मानव कल्याण के साथ कठोर दण्ड़ व्यवस्था थी। अगर दण्ड़ व्यवस्था कठोर नहीं होगी तो अत्याचार, ब्लात्कार, हत्या आदि बढ़ते रहेंगे। विश्व के भूमण्ड़ल पर सभी के लिए समान अधिकार है कि जीयो और जीने दो। सर्वे: भवन्तु सुखिन: सर्वे भवन्तु निरामया। वेद कहते हैं कि मनूभव: विज्ञानशील मनुष्य बनो। जिससे अन्दर मन होते है वही मानव होते हैं। वही मानव मानवता की आवाज को सुनकर मानव अधिकार को प्राप्त करने में व समाज कल्याण के लिए मानव अधिकार प्राप्त कर सकते हैं व उसका पालन होने से मानव कल्याण होगें।

विभाकर चतुर्वेदी,
खेल परिषद

>>>>>@<<<<<

माँ क्या है?

माँ रोते हुए बच्चों का खुशनुमा पलना है।
माँ मरूस्थल में नदी का मीठा सा झरना है।
माँ आँखों का सिसकता हुआ किनारा है।
माँ गालों पर पप्पी हैं, ममता की धारा है।
माँ त्याग हैं, तपस्या हैं,सेवा में।
माँ फूँक से ठंड़ा किया कलेवा है।
माँ कलम है, दवात है, स्याही है।
माँ परमात्मा की स्वंय एक गवाही है।
माँ चूल्हा धुंआ रोटी और हाथों का छाला है।
माँ जीवन की कड़वाहट में अमृत का प्याला है।
माँ पृथ्वी है, जगह है, धुरी है।
माँ बिना इस सृष्टि की कल्पना अधूरी है।
माँ संवेदना हैं, भगवान है, अहसास है।
माँ जीवन के फूलों में, खुशबू का वास है।
माँ लोरी है, गीत है, प्यारी सी थाप है।
माँ पूजा की थाली है, मंत्रों का जाप है।
माँ झुलसते दिनों में कोयल की बोली है।
माँ मेहन्दी के कुकुम है, सिंदूर है रोली है।
माँ अनुष्ठान हैं, साधना है, जीवन का हवन है।
माँ जिन्दगी के मोहल्ले में आत्मा का भवन है।
माँ चूड़ी वाले हाथों के मजबूत कंधो का नाम है।
माँ काशी है, काबा है और चारों धाम है।
माँ का महत्व दुनिया में कम हो नही सकता।
माँ कविता की ये पंक्तियाँ अपनी माँ के नाम करता हूँ।
मैं दुनिया की सब माताओं को प्रणाम करता हूँ।

प्रवेश यादव,
परीक्षा शाखा

>>>>>@<<<<<

स्मृतियाँ

मैं शशिकांत शर्मा बिक्री प्रतिनिधि हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय में कार्यरत हूँ। मेरी विश्वविद्यालय में नियुक्ति 28 जनवरी,1982 में हुई थी। सन् 1982 से आज तक की कुछ स्मृतियाँ मेरे दिलों दिमाग में आज भी बरकरार है। जिन्हें मैं आज इस पेज पर लिखकर जीवांत कर रहा हूँ।

सन् 1982 में हमारा विभाग माड़ल टाऊन में हुआ करता था। वहाँ से कभी-कभी हम विश्वविद्यालय में किसी काम से आते थे। उस समय के निदेशक ड़ॉ जे.सी. मुना जी भी विश्वविद्यालय में विभाग की समस्याओं को लेकर आते थे। मुझे अच्छी तरह से याद है कि कई अधिकारी हमारे विभाग में आते रहते थे। उन दिनों हम लोग नौकरी पर लगे थे तो हमने काम तेजी से करना शुरू कर दिया था। दिन-रात मेहनत करने से हमारा काम बढ़ने लगा। कुछ वर्षों के पश्चात् उस समय के वाइस चांसलर स्व. मुनिस रजा साहब हमारे माडल टाऊन में आए एवं समस्याओं को देखा। एक अच्छा सा आश्वासन देकर गए कि हमारे विभाग को विश्वविद्यालय में कुछ जगह दे देगें। इस तरह कुछ समय के पश्चात् हमारे निदेशक महोदय की मेहनत रंग लाई और हमें एस.ओ.एल. के बैरक नंबर 2 व 4 अलॉट हो गए। इससे हमारी पुस्तकोंकी अब यहाँ से बिक्री शुरू हो गई। कई वर्षों तक हमने इन्हीं बैरक में बैठकर काम किया। वर्ष 2010 में कामन वेल्थ गेम होने वाले थे तो विश्वविद्यालय को स्टेडियम बनाने के लिए जगह चाहिए थी। उस कारण हमें10, केवेलरी लाईन की कोठी अलॉट कर दी गई। जिसमें आज हम यही पर बैठकर काम कर रहे है। उस जमाने में भारतीय स्टेट बैंक रजिस्ट्रार आफिसके साथ होता था। जोकि अब अलग बिल्डिंग में चला गया है; वहाँ अब इसके साथ-साथ रेलवे बुकिंग, पोस्ट आफिस,दिल्ली परिवहन निगम का बस पास विभाग, केन्द्रीय भण्ड़ार, आई.सी.आई.सी.आई. बैंक हैं। आर्टस फैकलटी में एक बिल्डिंग होती थी आज दौलत राम कॉलेज के सामने एक नई सोशल साइंस की बिल्डिंग बन चुकी है और उसमें कई विभाग काम कर रहे हैं।

एक जमाने की बात है कि विश्वविद्यालय में कर्मचारी यूनियन हुआ करती थी। (नेता) लोग एक-एक महीनेकी (हड़ताल) करवा देते थे और धरने पर बैठ जाते थे। यूनियन तो आज भी है लेकिन हड़ताल पिछले वर्षों से खत्म हो चुकी है। अब कोई कर्मचारी या लीडर हड़ताल की धमकी नहीं देते हैं।

वर्ष (1982 - 2014) 32 वर्षों में विश्वविद्यालय में इतना कुछ बदल गया, आज दिल तो बहुत कुछ लिखने को करता रहता है लेकिन इस पर तो एक छोटी-सी पुस्तक बन जायेगी। मैं पहली बार विश्वविद्यालय के बारे में लिख रहा हूँ यह स्मृतियाँ जीते जी मेरे दिलो दिमाग में जीवंत रहेगी।

शशिकांत शर्मा,
हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय

मधुर स्मृति

सन् 2000 की बात है। मैं दिल्ली से मैंगलौर के लिए राजधानी एक्सप्रेस से जा रही थी। मेरे बेटे का दाखिला कस्तूरबा मेडिकलकॉलेज में हुआ था। मैं उसके लिए सामान ले कर जा रही थी। सामान कुछ ज्यादा था। शायद यह बात टी.टी. ने दिल्ली स्टेशन पर ही जान ली थी। जैसे ही गाड़ी दिल्ली स्टेशन से रवाना हुई और टी.टी. टिकटचैक करने आया तो उसने कहा कि आप के पास सामान ज्यादा है सामान का भी टिकट करवाना पड़ेगा। मैं अकेलीथी और मेरेपास नकद इतने रूपए भी नहीं थे। मैंने यह बात टी.टी. को कही कि रास्ते में नासिक स्टेशन पर मेरेएक रिश्तेदार मिलनेआ रहे हैं, मैं उनसे पैसे लेकर टिकट के पैसे दे दूंगी। लेकिन टी.टी. नही माना और कहा कि अगले स्टेशन पर या तो सामान उतारो या पैसे दो। मैं परेशान थी। इतने में ही एक सिख परिवार जो मेरे सामने वाली सीट पर बैठा था उन्होनें पैसे निकाले और मुझे देते हुए कहा लो बहनजी आप टी.टी. को टिकट के पैसे दो। मैनें उनका धन्यवाद किया और कहा कि नासिक स्टेशन पर मैं उनके पैसे वापिस कर दूंगी। उन्होंने कहा कोई नहीं जी पैसे बाद में आ जाएंगे। मैंने सुख की साँस ली। नासिक स्टेशन आने पर मैंने उनके पैसे लौटा दिए और मैं सुरक्षित मैंगलोर पहुँच गई। आज भी जब मुझेउस सिख परिवार का ध्यान आता है तो मेरा मन उनके लिए क्षद्धा और प्रेम से भर जाता है।

कमलेश खट्टर,
अनुभाग अधिकारी

>>>>>@<<<<<

शिक्षा में बदलाव

इक्कीसवीं सदी के तेरह वर्ष पूरे हो गए
और न जाने कितने ही जन बूढ़े हो गए
क्या शिक्षा भी अब बूढ़ी हो चली है?
या जरूरी इसमें कोई तब्दीली है
यह जो मन में था ख्याल
था यह शिक्षा में बदलाव का सवाल
सुनकर ये ख्याल, एक सज्जन के मन में उठा बवाल
सज्जन ने हमसे पूछा,
बदलाव, अरे कैसा बदलाव?
किस चीज का बदलाव?
किताबें बदली जाएंगी या
फिर अध्यापक बदले जाएंगे?
या परीक्षाएं नहीं होगीं
या होगी भी तो, अंको का महत्व न रह जाएगा?
कहीं ऐसा तो नहीं कि
बैठे बिठाए विद्यार्थी को ही बदल दिया जाएगा?

मैनें कहा - अरे ठहरिये जनाब,
इतने सवाल पूछते-पूछते तो आप
खुद ही परेशान हो जाएंगे।
इन सवालों से हटकर, सोचिए थोड़ा ऊपर,
सवाल है शिक्षा पद्धति में बदलाव का
इसे किसी की जागीर न समझकर
आम आदमी का हथियार समझने का
ऐसा हथियार जो -
अमीर-गरीब,ऊँच-नीच के
दरम्यानों का खात्मा करे।
लोकतंत्र के बीज बोकर
तानाशाही से परे
ऐसी शिक्षा जो
पनपने दे आजाद विचार
न छीने मासूमों से शिक्षा का अधिकार
जहाँ कल्पना के सागर में
विद्यार्थी गोते लगाए
सृजन के फूलों से बगिया महकांए?
जहाँ विद्यार्थी की जरूरतें हों, सर्वोपरि
अनुभवों को जोड़कर बढ़े कड़ी दर कड़ी
पर अब जो आया है बसंत
मन में लाया है उमंग
इस उमंग में हैं इन्द्रधनुषी रंग
आया बसंत, आया बसंत
खुशियों को रंग लाया बसंत।

विश्वनाथ प्रसाद,
वरिष्ठ सहायक

>>>>>@<<<<<

पवित्र भूमि संकिसा के परम पावन दलाई लामा जी के तीन दिवसीय, धम्म सम्मेलन के दौरान मेरी संकिसा यात्रा का संक्षिप्त वर्णन

मेरा सौभाग्य है कि मैं संकिसा कि यात्रा पर हूँ, मेरा सौभाग्य कि मुझे शान्तिदूत 14वें बौद्धधर्मगुरु दलाई लामा जी के तीन दिवसीय धम्म सम्मेलन में जाने का मौका मिला, मेरी यात्रा आनन्द विहार टर्मिनल से शुरू होती है। मेरे साथ मेरी दोस्त लिच्छिवी और उसका भांजा समर यात्रा पर गये, हमने आनन्द विहार टर्मिनल से यमुना एक्सप्रेस बस ली। करीब रात को दस बजे हम सब बस में बैठ गये थे यात्रा इतनी सुखद रही, बातों-बातों में हम कब भौगाँव पहुँच गये हमें पता भी नहीं चला, वहाँ से हमने ऑटो किया फिर हम लिच्छिवी की दीदी के घर पर पहुँचे, वहाँ पहुँचकर हम लोग नहा-धोकर उनकी पूरी परिवार के साथ, अपनी-अपनी गाड़ियों में पवित्र पावन धरती भूमि के लिए रवाना हो गये हमारे साथ कम से कम दस-बारह लोग थे कुछ लड़कियाँ कुछ लड़के माहौल बड़ा सुहावना बना हुआ था। सभी की जुबान पर बस परम पावन दलाई लामा जी का नाम था उन्हें देखने की इच्छा सभी के चित्त पटल पर थी। सभी अपने प्रिय गुरु जी से मिलने को उत्सुक थे, बाकि लोगों ने तो उन्हें बहुत बार देखा था, मगर मैं ऐसे सम्मेलन में पहली बार जा रही थी।

मेरे लिए ये पल हमेशा याद रहेगा मेरे हृदय में बस बार बार एक ही इच्छा हिलोरे मार रही थी मैं कब परम पावन दलाई लामा जी के दर्शन करूँगी। मैंने अपनी गाड़ी के शीशे खोल दिये ताकि मैं खेतों की शुद्धहवा महसूस कर सकूँ सुबह-सुबह, करीब सात साढ़े सात बजे का समय रहा होगा हमारी गाड़ी खेतों खलिहानों के बीच से होती हुई सड़क पर दौड़ी चली जा रही थी। मेरे मन के पंक्षी भी उसी गाड़ी के साथ साथ उड़े चले जा रहे थे सड़क के आस पास आलू, सरसों के हरे-हरे लहराते खेतों को देखकर मन पुलकित हो उठा तीन दिसम्बर आठ बजे तक हम सब संकिसा की पावन भूमि पर पहुँच चुके थे, मेरे हर्ष का तो मानो कोई ठिकाना ही ना हो।

मेरे सौभाग्य पर मैं नाज करती हूँ कि तुरन्त गुरु जी के दर्शन हो गए, सम्मेलन का पहला दिन था, परम पावन दलाई लामा जी के दर्शन करके मेरी आत्मा, आनन्दित हो गई। मैंने अपने सभी मित्रों के साथ परम पावन से मिले और पहले दिन के प्रवचन सुने, परम पावन दलाई लामा जी ने हम युवाओं को कहा धर्म से अधिक मानवता को मानने वाले लोग महत्त्वपूर्ण है दुनिया में सभी को अहिंसावादी होने की जरूरत है। उन्होंने दुनिया में जारी हिंसा के माहौल पर चिन्ता जताई और क्रोध और गुस्सा खत्म करने की भी नसीयत दी।

बौद्धधर्मगुरु यहाँ मोहम्मदाबाद की हवाई पट्टी पर चार्टर्ड प्लेन से उतरने के बाद सीधे संकिसा के होटल पहुँचे। पूर्व निर्धरित कार्यक्रम के अनुसार उन्होंने पहले यूथ बुद्धिष्ट सोसाइटी ऑफ इंडिया (वाई.बी.एस.) के कार्यकर्ताओं से मुलाकात की। करीब बारह मिनट की मुलाकात में बौद्धधर्मगुरु ने युवाओं को अहिंसा के मार्ग पर चलने का संदेश दिया। धर्मगुरु ने समझाया कि अंहिसा का अर्थ दूसरे का हित करना और सम्मान करना है। यदि सभी इस पर अमल करें तो दुनिया अच्छी हो जाएगी। उन्होंने दुनिया में चल रही हिंसा पर चिंता जताई। उन्होंने युवाओं से सवाल भी किया कि बिना गुस्सा किए क्या कोई हिंसा कर सकता है इस पर सभी ने नहीं में जवाब दिया।

20 देशों से पहुँचे अनुयायी: दलाई लामा का धम्म प्रवचन सम्मेलन में सोमवार से बुधवार तक मैनपुरी जिले के राजघाट संकिसा में हुआ। धम्म प्रवचन सुनने को बीस से अधिक देशों के अनुयायी यहां पर पहुँचे थे दलाई लामा के दिये गये संदेश का अनुवाद कैलाश चन्द्र बौद्धकर रहे थे बुद्धिष्ट सोसाइटी ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश चन्द्र बौद्धने बताया था कि सुबह आठ बजे से ग्यारह बजे तक प्रवचन होंगें शाम तीन से चार बजे तक फिर प्रवचन होंगें। सांय छह से नौ बजे तक सांस्कृतिक कार्यक्रम विभिन्न देशों से आए कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

बौद्धधर्मगुरु दलाई लामा जी का संकिसा से सीधा प्रसारण: मेरा सौभाग्य कि मैंने परम पावन को बड़ी नजदीक बैठ कर प्रवचनों को सुनने का मौका मिला, हम सभी साथी दोस्त, लिच्छिवी के परिवार के लोग स्टेज के बिल्कुल नजदीक ही बैठे थे। जिससे हमें गुरु जी के दर्शनों और प्रवचनों को नजदीक से सुनने का मौका मिल सका। बौद्धधर्मगुरु के प्रवचन का जसराजपुर संकिसा से सीधा प्रसारण किया गया। इसको लेकर तीन निजी कम्पनियों ने यहां टॉवर लगा दिये थे। धर्मगुरु तीन से पांच दिसम्बर तक मैनपुरी जिले के राजघाट संकिसा में आयोजित समारोह में प्रवचन दिये।

यूथ बुद्धिष्ट सोसाइटी ऑफ इंडिया: (Y.B.S.) के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश बौद्धऔर महासचिव भंते डॉ॰ उपानंद यहां की व्यवस्थाओं को बनाने के लिए दिल जान से लगे हुए थे। वाई.बी.एस. सेन्टर राजघाट संकिसा पर एक लाख अनुयायियों के आने की संभावना को देखते हुए बड़ा पंडाल तैयार किया गया। अनुयायियों के बैठने का स्थान भी मंच से थोड़ी दूरी पर ही था। इससे कि लोग आसानी से धर्मगुरु जी को देख सके। साउंड के लिए विशेष व्यवस्था की गयी थी। जिससे कि हर कोई गुरु जी के प्रवचनों को सुन सके। जो लोग धम्म प्रवचन में समारोह में शामिल हुए उनके परिचय पत्र भी बनाए गए। कौन कहा बैठेगा, इसका स्थान भी पहले से तय हो चुका था। दलाई लामा डॉट कॉम पर भी लोग प्रवचन सुन सकते हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश चन्द्र बौद्धने बताया कि पिछली बार से इस बार समारोह काफी बेहतर नजर आएगा, और काफी बेहतर भी था मैंने खुद देखा है।

जिलाधिकारी द्वारा जाँच: संकिसा के समारोह स्थल वाईबीएस सेन्टर राजघाट तक प्रकाश की बेहतर व्यवस्था रही। उपजिला अधिकारी सदर अमित आसेरी संकिसा पहुँचकर उन्होंने उस स्थान को भी देखा जहाँ गुरु जी ठहरे थे। इसको लेकर होटल के मैनजमैन्ट से भी बातचीत की गई।

संकिसा के राजघाट में तीन दिसम्बर से तीन दिन तक चला प्रवचन कार्यक्रम।

एक लाख लोगों के लिए बनाया गया पंडाल: जब मैंने पहली बार विशाल पंडाल देखा मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा क्योंकि इससे पहले मैंने इतना बड़ा धम्म प्रवचन के लिए पंडाल नहीं देखा था। कम से कम एक लाख लोगों के लिए यह पंडाल लगाया गया था।

आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विरासत वाली संकिसा की पवित्रा धरती: बौद्धधर्म के अनुयायियों में शान्ति का बोध कराने वाली आध्यत्मिक व सांस्कृतिक विरासत संजोने वाली धरती है।

संकिसा का विशेष महत्त्व: मान्यता है कि यहां भगवान बुद्धका स्वर्ग से अवतरण हुआ था यही पर उन्होंने अपनी माँ को उपदेश दिया था। इसी धरती पर बौद्धधर्मगुरु दलाई लामा के पहुँचने से संकिसा में भव्य तैयारी की गई थीं।

कई देशों के लोगों की आशंका हुई पूरी: मैं यह दृश्य देखकर पुलकित हो उठी एक साथ एक ही मंच पर कई देशों के अनुयायियों को देखकर, जैसे इंग्लैड, अमेरिका, जर्मनी, पौलैंड, थाईलैंड, रुस, भूटान, तिब्बत, मंगोलिया से आने की संभावना थी और आए इससे भी अधिक स्विटजरलैंड। पंडाल में सभी के लिए व्यवस्था की गई थी।

5 दिसम्बर को परम पावन की संकिसा से विदाई: पाँच दिसम्बर को सुबह 8 से 12 बजे तक धम्म प्रवचन हुआ। दोपहर तीन बजे से देर रात तक अरूणाचल, तिब्बत व स्थानीय टीमों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया गया इसके बाद छह दिसम्बर की सुबह दलाई लामा जी हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला के लिए रवाना हो गये। जो सभी के लिए अस्मरणीय पल था।

अतः मैं कह सकती हूँ कि मेरी पवित्रा धरती संकिसा की यात्रा के दौरान कितने सुखद पड़ाव आये, मैं कितने पावन लोगों से मिली। मेरा जाने का मकसद गुरु जी से मिलने की तीव्र इच्छा एवं मेरा शोध प्रबंध को लेकर, मेरा शोध शीर्षक ''पालि अभिधम्म में चित्त एवं चेतसिक की अवधरणाओं का एक दार्शनिक अध्ययन है। गुरु जी की तीन दिनों की शिक्षा मेरे शोध कार्य को एक नई दिशा दे गई जो मैंने सोचा भी नहीं था। प्रवचनों के बाद दोपहर में जब हमें समय मिलता हम निकल पड़ते संकिसा यात्रा पर। हम सब गाड़ी में बैठे मैनपुरी से फर्रुखाबाद की यात्रापर निकले इसी बीच यहां अनेक तीर्थ स्थल आते हैं। मैनपुरी जनपद को पार करके फर्रुखाबाद आता है इन दोनों के बीच एक नदी आती हैं जो काली नदी के नाम से स्थानीय लोग काली नदी कहते हैं। शाक्य मुनि बुद्धविहार के थेर डॉ॰ धम्मपाल थेर से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उन्होंने मुझे वहां के तीर्थ स्थलों के बारे में बताया और मेरे शोध प्रबंध को किस प्रकार से आगे बढ़ाऊ। संकिसा का वृतान्त किस प्रकार शोध कार्य में करूँ ये सारी बाते मुझे बताई।

संकिसा की पावन धरती पर बौद्धधर्म गुरु परम पावन दलाई लामा जी का आगमन 03 दिसंबर को हुआ। इसमें गुरु जी ने असंख्य उपासकों और उपसिकों को धर्म की शिक्षा दी। जिससे असंख्य श्रृद्धालुओं, जो कि देश विदेशों से आए हुए थे उनको जीवन के गम्भीर रहस्यों से अवगत कराया, मैं अपने शोध विषय से संबंधित शिक्षा पाकर धन्य हो गई, जो मेरे शोधकार्य में मील का पत्थर साबित हुई। जैसे कि मेरे शोध प्रबंध का शिर्षक है ''पालि अभिधम्म में चित्त और चैतसिक की अवधरणाओं का एक दार्शनिक अध्ययन''। चित्त परामर्थ सत्य है जो प्रथम परमार्थ सत्य है इस पर तीन दिन तक प्रवचन दिये। परम पावन दलाई लामा जी ने बौधिचर्यावतार विषय पर प्रवचन दिये कि हमारा जीवन किस प्रकार होना चाहिये हमारी दिनचर्या कैसी होनी चाहिए हमें अपने चित्त को किस प्रकार से शांति की ओर ले जाना है अपने चित्त को कैसे परिशुद्धकरके जीवन को बहुमूल्य बनाया जाये। मैं परम पावन दलाई लामा जी के प्रवचनों को अपने शोध प्रबंध में शामिल किया है। मैंने गुरु जी के मुख कमलों से सीधा अपने कानों से गुरु जी के प्रवचनों को सुनने का मौका मिला। ये मेरा सौभाग्य है।

खास आभार दलाई लामा ट्रस्ट एवं प्रवचन समीति यूथ बुद्धिष्ट सोसाइटी ऑफ इण्डिया वाई.बी.एस. सेन्टर, राजघाट संकिसा का जिन्होंने करीब चार महीने पहले से ही दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रागण में आकर मुझे और मेरे मित्रगणों को दलाई लामा जी के

(प्रोग्राम में शामिल होने का निमंत्राण पत्र दिया)। प्रोग्राम के चार महीने पहले से ही वाई.बी.एस. के अध्यक्ष और सभी कार्यकर्ताओं को तहेदिल से धन्यवाद करती हूँ। परमपूज्यनीय परम पावन दलाई लामा जी का कोटि कोटि नमन। जिनके आगमन से भारत वर्ष के ही नहीं अपितु विदेशों के उपासकों को आत्मा का भोजन रूपी प्रवचन सुनने को मिला और परमपूज्यनीय दलाई लामा जी के दर्शन करने का सौभाग्य देश विदेशों के लोगों को मिला। 5 दिसंबर, 2018 को परम पावन दलाई लामा जी के प्रवचनों से मेरे शोध कार्य से संबंधित सभी प्रकार के तत्व मुझे मिले। तीन दिनों के प्रवचन में चित्त पर चर्चा की चित्त, मन, मनविकार, सभी एक ही तत्त्व के नाम है। गुरु जी ने मनुष्य के चित्त के बारे में बताया कि मनुष्य का चित्त चंचल चित्त है। इस चित्त को कैसे परिशुद्धकिया जा सकता है, किस प्रकार मनुष्य उसके गुढ रहस्यों को जान सकता है। चार परमार्थ सत्यों को जानना अत्यंत आवश्यक है गुरु जी ने बताया।

पिंकी देशराज
पी. एच.डी. दर्शनशास्त्र विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-7

>>>>>@<<<<<

बढ़ी जा रही थी वो

चली जा रही थी वो

एक अजनबी सी राह पर

एक अजनबी सी मंजिल की ओर

बढ़ी जा रही थी वो

हर सुबह नया फरमान लिये

हर शाम आँखों में नमी लिये, उम्मीद लिये,

लड़ी जा रही थी वो

एक खामोशी की तलवार लिये

कलम की कटार लिये

सच्चाई की ढाल लिये।

बढ़ी जा रही थी वो।।

पिंकी देशराज
पी. एच.डी. दर्शनशास्त्र विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-7

>>>>>@<<<<<

उसका मेरा रिश्ता कुछ इस तरह से था

उसका मेरा रिश्ता कुछ इस तरह से था

जैसे रेल की पट्टरियों का रिश्ता,

साथ रहती तो है, मगर कितनी दूर

कि उनका मिलना मुमकिन नहीं,

मगर एक दूसरे के बिना अधूरापन लिये

चित्त पटल पर तस्वीर उसकी है

किसी ने देखा है कभी रेल को एक पटरी पर चलते हुए

उसका मेरा रिश्ता कुछ इस तरह से था

उसका मेरा साथ कुछ इस तरह से था

आज देखा है उसे गौर से मैंने

उसने भी देखा था मुझे कुछ हसरत भरी नजरों से,

जैसे निहार रहे थे रेल की पटरियाँ एक दूसरे की ओर,

क्या इतनी बड़ी रेलगाड़ी चल सकती दोनों के बिना

मैंने अपने मन को समझाया, और कहा चल नहीं सकती,

तेरे बिना मेरी, जीवन की ये गाड़ी

मेरे लिए न सही भटके हुए मुसाफिरों को अपने मुकाम

तक पहुंचाने के लिए ही सही,

मेरे साथ रह जा जीवन भर के लिए

उसका मेरा रिश्ता कुछ इस तरह से था,

उसका मेरा साथ कुछ इस तरह से था

जैसे नदी के दो किनारे

कभी देखा किसी नदी को एक किनारे के बिना,

सोच के गलियारे में देखा नहीं नदी का एक किनारा

नहीं हो सकता,

एक किनारा न होने से नदी अपना अस्तित्व खो देती है,

वे अलहड़ नदी उफान के साथ इस सृष्टि को नाश

कर देती है।

बहाकर ले जाएँगी अल्हड़

तू तो अल्हड़ नहीं है, पता है मुझे

कई बार महसूस किया है तेरी जिन्दादिली को

मुझे नहीं तू, इस सृष्टि को बचाने के

लिए ही सही, मेरे साथ रह जा जीवन भर के लिए

उसका मेरा रिश्ता कुछ इस तरह से था

जैसे समुद्र और सुनामी है,

तू समुद्र की तरह शान्त

मगर मैं समुद्री तूफान की तरह अशांत,

सुनामी तो नादान है, बस समुद्र से मिलना चाहती है।

उसे क्या पता उन दोनों के मिलन से दुनिया में तबाही मचती है।

तू मुझसे मिलने के लिए नहीं, सुनामी से दुनिया को तबाही से बचाने के लिए, ही सही,

मेरे साथ रह जा जीवन भर के लिए

उसका मेरा रिश्ता कुछ इस तरह से था।

उसका मेरा रिश्ता कुछ इस तरह से था

जैसे धरती और आसमां

साथ रहकर भी साथ नहीं

दूर क्षितिज पर बैठी हुई देख रही थी, आसमां की तरफ

शाम ढले जैसे आलिंगन कर रहे धरती और गगन

क्षितिज के उस पार, प्यासे है धरती के लोग तेरी रहमत की

बारिश के लिए,

तू मेरी प्यास बुझाने के लिए नही

कितने लोग प्यासे हैं तू उनकी प्यास बुझाने के लिए ही सही

मेरे साथ रह जा जीवन भर के लिए।

उसका मेरा रिश्ता कुछ इस तरह से था

पता है कि मेरा नहीं था, किसी और का था

रिश्तों की इन कड़ी में, तिल भर की जगह जो खाली है।

तू मेरे लिए दुनिया से लड़ता क्यूं है मैं अकेले ही काफी था

इस दुनियां से लड़ने के लिए, मेरा भी कोई वकील है जो मेरे

गुनाहों की वकालत करता है, मुझे एहसास कराने कि जरूरत क्या

थी, तू मुझे रिहा कराने के लिए नहीं उम्र कैद कराने के लिए ही सही

तू मुझे बेगुनाह बनाने के लिए न सही

गुनाहगार बनाने के लिए ही सही

मेरे जीवन में रह जा, जीवन भर के लिये

उसका मेरा रिश्ता कुछ इस तरह से था।।

पिंकी देशराज
पी. एच.डी. दर्शनशास्त्र विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-7

>>>>>@<<<<<

कल्पना

कागज का एक कोरा पन्ना
हाथों में लिए बैठी हूं
और कलम से उस पर
उकेरने लगी हूं कुछ लकीरें
लकीरें सपनों की, हकीकत की
जिसने रूप ले लिया एक घर का
खुश होती हूं वह घर देखकर
जिसमें एक गाय बंधी है
और मां झाड़ू लगा रही है
चूल्हे को लीपने की तैयारी है
पिता कंधे पर हल रखे खेतों की
ओर जाने के लिए तैयार है
घर के आस पास लगे हैं
हरे-भरे पेड़ पौधे
बगल में बह रही है एक नदी
और नदी का कलरव, चिड़ियों की चहचहाहट
एक अलग ही संगीतमयी ध्वनि कानों में रस
घोल जाती है
शुद्धवातावरण, शुद्ध हवा
अचानक कल्पना से हकीकत में पहुंचने लगी हूँ
जहां भटक रही हूं तपती सड़कों पर
आस पास पक्के मकान, बडी बड़ी इमारतें
धूल भरी हवाएं, मोटर गाड़ियों का शोर
अब कहीं नहीं
वो हरा भरा संसार, वो चैन की सांसें
सूकून के दो पल
है तो सिर्फ भागमभाग
सूरज में तपन
ठंडी छांव के लिए भटकना
एक रोटी के लिए आदमी
तड़प रहा है
जहां बुढ़ापा दबा देता है
जवानी को समय से पहले

कनुप्रिया
हिंदी विभाग, कला संकाय

>>>>>@<<<<<

बेटियाँ

काश!
बेटियाँ, बन पातीं पिता
और
महसूस कर सकतीं
पिता की आत्मा
जो बेटियों का सुख देख
तृप्त हो जाती

बाँट पातीं वह भी
पिता की उदासी, चिंताएँ
मन का डर
कि
जाने वे बिछड़कर
कहाँ बसेरा बनाएँगी
समर्पित होकर भी उस नीड़ में
क्या वह अपने लिए
एक तिनका सुख
तलाश पाएँगी?

बेटियाँ
अगर पिता हो पातीं
तो वह बाँट लेतीं
उन आँखों की उदासी
मन का डर
ले जातीं उस आत्मा को
समाज कीदुश्चिंताओं से दूर
जहाँ केवल सुख होता
केवल सुख...

कनुप्रिया
हिंदी विभाग, कला संकाय

>>>>>@<<<<<

चिड़िया और लड़की

चिड़िया
जो आकाश में उड़ी
अपनी चीं चीं में
बताती रही अपनी खुशी
एक वह भी थी
लड़की
जो चिड़िया की तरह
अपनी चहचहाहट
न बता सकी
उसे सोचना पड़ा
दूसरों के बारे में
लोगों की हँसी, प्रताड़ना
और फुसफुसाहट के बारे में
क्योंकि वह भावनाहीन
और क्रूर नहीं है
इसलिए
उदास हुई अपने प्रति
उपेक्षा पर, विश्वास तोड़ने पर
अंततः वह जता नहीं पाई
अपनी अकुलाहट, आक्रोश
अपनों के सामने
लेकिन उसका
निश्चय है
एक दिन वह भी
उस चिड़िया की तरह
चहचहाएगी
जो आकाश में उड़ रही है
लगातार
अपनी मंजिल की खोज में

कनुप्रिया
हिंदी विभाग, कला संकाय

>>>>>@<<<<<

थैला

थैला मेरा
जिसे कंधों पर टांग
रोज़ सुबह निकल जाता हूं
जादुई है ये थैला
मेरी तरह ईमानदार
तभी तो साथ है मेरे
अब तक बेचता हूँ खूशबू
शीशी में,
सुबह से शाम
कई घरों में ऑफिसों
में बेच आता हूं
खूशबू की कुछ शीशियां
एक सरकारी ऑफिस
तसल्ली भरा माहौल
मेरा काम था बेचना
उनका खरीदना
पूछा हँसते हुए उन्होंने
क्या है इस थैले में
मैंने कहा खूशबू
जो आपके घर ऑफिस को महका देगी
उन्होंने पूछा कितने की शीशी
मैंने कहा 100 की तीन
फिर उनमें से एक ने पूछा
और इस थैले की कीमत
हंसते हुए मैं बोला
तुम क्या लगाओगे
मेरे इस थैले की कीमत
जानते हो इस थैले ने मुझे क्या दिया?
एक मकान मेरे दो बेटे
जिनमें से एक इंजीनियर और एक टीचर
ये थैला है अनमोल.....

कनुप्रिया
हिंदी विभाग, कला संकाय

>>>>>@<<<<<

पर मेरा आज

माँ, मैं आया था
इस संसार में
बड़ा खुश था
बाहर की रोशनी देखकर
छोटा था, अनभिज्ञ था,
सभी बातों से
खेलना, खाना, सोना
बस यही तो काम था मुझे
धीरे-धीरे बड़ा होता गया
समझ आती गई
और नींद जाती रही,
मेरी सहजता मेरी सरलता
सब कुछ खो गया समझदारी में
लाद दिया गया बड़ा-सा बस्ता मेरे कंधों पर
चल निकला मैं भी स्कूल के उसी ढर्रे पर
जिस पर सब चलते हैं
मेरी सहजता, मेरी स्वाभाविकता, मेरी संवेदनाएं,
मेरी रचनाशीलता
सभी मुझसे छीन ली गई
कह दिया गया मुझसे
बेटा, तुम ही तो कल के भविष्य हो
पर मेरा आज
मैं उसे कहाँ खोजूँ?

कनुप्रिया,
हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

>>>>>@<<<<<

जीना चाहती हूँ

नीले आकाश में उड़ते पक्षियों को देखकर
उड़ना चाहती हूँ मैं।
उमड़ते-घुमड़ते बादलों की तरह
शोर मचाना चाहती हूँ मैं।
जीवन के हर संघर्ष को मात देकर
सपने साकार करना चाहती हूँ मैं।
बचपन के वो सुहाने दिन, जवानी की मस्ती
और बुढापे के अनुभव को
महसूस करना चाहती हूँ मैं।
मत रोको मेरी उड़ान को
आकाश छूना चाहती हूँ मैं।
डगमगाती जीवन की राह को
संभालना चाहती हूँ मैं।
और ने ही जन्म दिया, बड़ा किया, जीवन दिया
मत कुचलों उस ममता को, ममता बाँटना चाहती हूँ मैं।
अकेले मत घूमों, किसी से बात मत करो,
रात को बाहर मत जाओ,
मत डालो इतनी बेड़ियाँ पॉव में,
इंसानो की तरह जीना चाहती हूँ मैं।
और किसी से कम नहीं, छू सकती है हर ऊँचाई को
यह विश्वास दिलाना चाहती हूँ मैं।
इंदिरा गाँधी, मदर टैरेसा औरते ही तो थी
इनकी तरह ही बनना चाहती हूँ मैं।
मुझे भी भगवान ने ही बनाया है तुम्हारी ही तरह
तुम्हारी तरह ही इज्जत चाहती हूँ मैं।
मर्द के हाष का खिलौना नहीं है औरत
यही संदेश देना चाहती हूँ मैं।
कभी बेचारी तो कभी दया की पात्र बनती है
कभी कुचली-मसली जाती है,
फिर भी औरत निर्भया बनकर नाम अमर कर जाती है।
मत कुचलों मेरे अरमानों को
इन्हें पूरा करना चाहती हूँ मैं।

वीनू भाटिया, वरिष्ठ निजी सहायक
ए.सी.बी.आर. दिल्ली विश्वविद्यालय

>>>>>@<<<<<

रिश्तों का सच

रिश्तों को बचाँऊ कैसे,
कभी ये तो कभी वो रूठ जाता है,
सबको मनाँऊ कैसे।

रेत का महल है, ये रिश्ते,
पानी की एक लहर से बह जाते हैं,
इस महल को बचाँऊ कैसे।

इक पल की खुशी और दो पल का गम,
यही है रिश्तों की कहानी,
इस कहानी को बचाँऊ कैसे।

डूबती हुई नाव की तरह है ये रिश्ते,
इक पल पानी के ऊपर, दूसरे पल पानी के नीचे,
इस नाव को बचाऊँ कैसे।

अहम् और क्रोध से पले ये रिश्ते,
अपनी-अपनी इच्छाओं में दबे ये रिश्ते,
सबकों अपना बनाऊँ कैसे।

काश मुझे भी कोई जिन्न मिल जाए,
जो मेरे हिस्से का प्यार दिला दे मुझे,
पर ऐसा जिन्न पाऊँ कैसे।

वीनू भाटिया, वरिष्ठ निजी सहायक
ए.सी.बी.आर. दिल्ली विश्वविद्यालय

>>>>>@<<<<<

न जाने क्यूं

न जाने क्यूं ऐसा होता है,
दिल तड़पता है, रोता है,
अनजाने में ही कुछ याद आ जाता है।

वक्त की गर्दिश में इंसान कितना कुछ खोता है,
कई अपने बिछड़तें हैं, कई दर्द सीने में उमड़ते हैं,
दिल उनको याद करके बैचेन होता है,
दिल तड़पता है, रोता है,
अनजाने में ही कुछ याद आ जाता है।

ख्वाहिशें है लाखों जो दिलो ने पाली है,
किसी से मिलने की चाह, किसी के खोने का दुख,
इन सब बातों से ही आँखों में पानी है,
दिल तड़पता है, रोता है,
अनजाने में ही कुछ याद आ जाता है।

जिंदगी है छोटी ख्वाहिशें हैं बड़ी,
ना चाहते हुए भी चाहतें हैं बड़ी,
इन्हीं चाहतों को पूरा करने में,
सारा जीवन निकल जाता है,
दिल तड़पता है, रोता है,
अनजाने में ही कुछ याद आ जाता है।

वीनू भाटिया, वरिष्ठ निजी सहायक
ए.सी.बी.आर. दिल्ली विश्वविद्यालय

>>>>>@<<<<<

दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित वैज्ञानिक संगोष्ठी-2019 की झलकियां

वैज्ञानिक संगोष्ठी में स्वागत भाषण देते हुए सहायक कुलसचिव (राभा), श्री आनंद कुमार सोनी तथा वक्ता डॉ. गर्ग

वैज्ञानिक संगोष्ठी में "प्रदूषण तथा इलेक्ट्रोनिक उपकरणों का आँखों पर दुष्प्रभाव एवं इससे बचाव" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए डॉ. गर्ग

वैज्ञानिक संगोष्ठी में "प्रदूषण तथा इलेक्ट्रोनिक उपकरणों का आँखों पर दुष्प्रभाव एवं इससे बचाव" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए डॉ. गर्ग

"प्रदूषण तथा इलेक्ट्रोनिक उपकरणों का आँखों पर दुष्प्रभाव एवं इससे बचाव" विषय पर आयोजित वैज्ञानिक संगोष्ठी का लाभ उठाते हुए अधिकारी/कर्मचारीगण

दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित राजभाषा वार्ता-2019 की झलकियां

दीप प्रज्ज्वलित वैज्ञानिक संगोष्ठी में "प्रदूषण तथा इलेक्ट्रोनिक उपकरणों का आँखों पर दुष्प्रभाव एवं इससे बचाव" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए डॉ. गर्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित हिंदी सप्ताह/पखवाड़ा - 2021 की झलकियां